International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 04(II), October - December, 2024, pp. 69-74

बौद्ध दर्शन (धर्म) में नैतिक/जीवन मूल्यों का अवलोकन एवं बौद्ध धर्म की देन

राहुल मधुकर मघाडे*
डॉ. सोनू सारण**

सार

आज विश्व में जहॉ भी युद्ध हुऐ है, या युद्ध चल रहे है, अशांति का वातावरण है, भ्रष्टाचार हैं, असुरक्षा की भावना मन में है वही पर बुध्द के शिक्षा की, उन्होने दिऐ गऐ सिद्धांत और मूल्यों कि आवश्यता है। इसीलिऐ हमे बुद्ध कि शैक्षिक विचार, मूल्य एवं सिद्धांत अपने पाठयक्रमो में समावेशित करने कि आवश्यकता है। अगर सभी पाठयक्रम में बुद्ध के शैक्षिक विचार, सिद्धांत एवं मूल्यों को शामिल कर के इसे मानव विकास में लगाये जा सके। इसकी वर्तमान परिदृश्य में सबसे जरूरी आवश्यकता है!

शब्दकोशः *भ्रष्टाचार, शिक्षा, सिद्धांत, शैक्षिक विचार, पाठयक्रम।*

प्रस्तावना

बौद्ध दर्शन (धर्म) में नैतिक/जीवन मूल्यों का अवलोकन

किसी भी समाज, राष्ट्र व धर्म द्वारा बनाये गये नियमों व आदर्शों के अनुसार आचरण करना ही नैतिकता है। समाज द्वारा निर्धारित नियमों के अनुकूल मनोवृत्तियों से सम्बन्धित मूल्य ही नैतिक मूल्य है। भारतीय संस्कृति में सदैव नैतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया गया है। धर्म सदैव ही समाज के लिये नैतिकता का निर्धारक तत्व रहा है। समाज में अनुशासन बनाये रखने के लिये धर्म का पूर्णतः पालन आवश्यक होता है, इसमें विज्ञान, सभ्यता, बंधुत्व के मूलभूत तत्व, स्वतन्त्रता का समन्वय हाना आवश्यक होता है, तभी ये धर्म समाज के साथ मानवता को प्रोत्साहन देता है। नैतिक मूल्य ही सिद्धान्तों का एक पुंज है जो सही का गलत के मूल्यांकन करने हेतु दिशा प्रदर्शित करता है। भारतीय धर्म व दर्शन में दया, दान, सत्यता, अहिंसा, उदारता, करुणा, मानव कल्याण व संयम को मुख्य रूप से नैतिक मूल्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। समाज में वैचारिक मतभेद सदैव रहा है यहाँ किसी भी उठाये गये कदम को व्यक्ति जहां एक ओर नैतिकता की संज्ञा देता है तो दूसरी ओर नैतिकता व अनैतिकता का अंतर मनुष्य के अपने विचार है परन्तु जहाँ तक धर्म एवं दर्शन की बात है नैतिकता व अनैतिकता का निर्णय 'कार्य के परिणाम' से होता है। परिवर्तित होते सामाजिक परिवेश में हम धर्म का उतनी गहनता से अध्ययन नहीं कर पाते तथा उसमें निहित रहस्यमयी व गूढ़ शिक्षाओं का मूल अर्थ नहीं समझ पाते, अतः उन्हें अपने जीवन में भी नहीं उतार पाते है। यदि हम धर्म का विश्लेषण समय, परिस्थितियों व आधुनिक परिवेश के अनुसार कर उसे अपने जीवन में उतारने हेतु तत्पर है तो हम आसानी से यह समझ सकते

---

* शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका, इतिहास विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं, राजस्थान।

हैं कि मानव जीवन व्यतीत करते हुये धर्म का आचरण हम अपने नैतिक कर्तव्यों, अपने आचार, व्यवहार के माध्यम से भी कर सकते हैं। वर्तमान समय में तेजी से परिवर्तित होती आवश्यकताओं व जीवन पद्धति में मानव व समाज जहाँ एक ओर भौतिक साधनों से सम्पन्न है वहीं दूसरी ओर समाज अनैतिक कार्यों की ओर लगातार बढ़ रहा है। समाज के लोगों में अविश्वास की भावना, शोषण, भ्रष्टाचार आदि अनेक बुराइयाँ व्याप्त है, इससे समाज में नैतिक व सामाजिक मूल्यों का ह्रास होता है, इससे समाजमें नैतिक व सामाजिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। इसका मुख्य रूप से प्रभाव सामाजिक व पारिवारिक विघटन के रूप में हमारे समक्ष है।

'हेराल्ड व टीटस' के अनुसार, ''मूल्य व्यक्ति और वातावरणीय परिस्थितियों के बीच एक सम्बन्ध है जो व्यक्ति को प्रशंसनात्मक प्रतिक्रिया करने के लिये जाग्रत करता है।''

भारतीय संस्कृति के धर्मों में से एक बौद्ध धर्म जो मुख्य रूप से मानवीय धर्म के रूप में स्थापित था, में तथागत बुद्ध ने सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनैतिक स्वतन्त्रता व समानता की शिक्षा दी है। तथागत ने अपने धर्म की नैतिकतापूर्ण व्याख्या की है। इसी कारण लोगों ने इसे धर्म नहीं बल्कि आचार शास्त्र के रूप में भी स्वीकार किया है। भारत में प्राचीन समय से ही धर्म को बड़े व्यापक रूप में ग्रहण किया गया है जिसने जीवन के समस्त कार्यकलापों को अपनी शीतल छाया में ढ़क लिया था जिसके नीचे भारतीय रूप में धर्म में मानव जीवन व उससे सम्बन्धित सभी पहलुओं के विषय में वर्णन प्रस्तुत किया गया है, परन्तु हम उस मूल तथ्य को समझने के स्थान पर धार्मिक कठोरता व कट्टरता तथा स्वयं को सर्वप्रमुख सिद्ध करने की चेष्टा करने के उद्देश्य से नैतिकता से दूर होते जाते हैं। ऐसा नहीं है कि बौद्ध धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों में नैतिकता का स्पष्ट विश्लेषण नहीं है। सभी धर्मों के ग्रन्थों में मानवोचित व्यवहारों व कर्मों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य समाज व राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का आधार है, अतः समाज में नैतिकता पूर्ण कार्यों को सम्पादित करते हुये मनुष्य अपने समाज व राष्ट्र को मजबूत आधार प्रदान करता है। परन्तु जब हमारा समाज भारतीय सांस्कृतिक विरासत को छोड़ हिंसक व अनैतिक प्रवृत्तियों की ओर बढने पर ही जीवन का मंगलमय होता है।

त्रिपिटक व अन्य बौद्ध ग्रन्थों में पंचशीलों की विस्तृत व्याख्या मिलती है। भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक, उपासिकायें मुख्य रूप में पंचशील का पालन करते है। परन्तु यह उनके सामर्थ्य अनुसार होता है। पंचशील का पालन स्तर दोनों वर्गों के लिये अलग–अलग है तथा उनके उल्लंघन पर किये गये व्यवहार (दण्ड) भी अलग है। मानव जीवन में नैतिक मूल्यों को जीवन के आचरण व व्यवहार में अपनाकर मानव जीवन के साथ हम अपने सामाजिक परिवेश में भी सकारात्मक परिवर्तन कर सकते है। मानव, प्रज्ञा, शील, मैत्री व करुणा जैसे मूल्यों को स्थापित कर समाज में शान्ति व अहिंसा की स्थापना में सहयोग करता है व तथागत 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' उपदेश को अपनाता है। तथागत ने अपने शब्दों में कहा – कि जन्म भी दुःख है, मरण भी दुःख है, अप्रिय मिलन भी दुःख है, प्रिय वियोग भी दुःख है, इच्छित वस्तु प्राप्ति न होना भी दुःख है। अतः चारों दिशाओं में दुःख दिखायी पड़ता है, आखिर इसका कारण क्या है? इसका कारण सिर्फ तृष्णा है। ये तृष्णा कहाँ से उत्पन्न होती है। मनुष्य रूप, रस, गन्ध, शब्द, तर्क–वितर्क व विचारों से आसक्ति करने लगता है, उसी समय तृष्णा का जन्म होता है। जब तृष्णा का जन्म हुआ और उसकी पूर्ति नहीं हो पाती है तो दुःख होता है। हमें इसी दुःख से बाहर आने का प्रयास करना चाहिये। महात्मा बुद्ध ने मानव के इसी दुःखों के कारणों की खोज की व उनके निवारण हेतु मार्ग दिखाया।

''दुक्खे अरियसच्चे दुक्खसमुदये अरियसच्चे, दुःखनिरोधे।
अरियसच्चे दुःखनिरोधगामिनिया प्रतिपदाय अस्थिसच्चे।''

संसार दुःखों का घर है दुःख होने के कई कारण है, जैसे – अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति, जरामरण आदि। ये बारह कड़ियाँ है, जो 'द्वादश निदान' कहलाते हैं। तथागत ने इसी दुःख से छुटकारा प्राप्त करने के लिये मार्ग दिया। यही मार्ग ही शिक्षायें हैं। इन शिक्षाओं को 'अष्टांगिक मार्ग' कहते हैं। इन शिक्षाओं के माध्यम से तथागत ने यह शिक्षा दी कि – वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ध्यान रखना, रागद्वेष से मुक्त विचार रखना, अप्रिय वचनों का त्याग, सत्कर्मों का अनुसरण,

नैतिक मानसिक उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहना, सच्ची धारणा रखना तथा मन व चित्त की एकाग्रता बनाये रखना चाहिये। तथागत के नैतिक विचारों का भारतीय नीतिशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान है। महात्मा बुद्ध के नैतिक सिद्धान्त देश काल की सीमा में बंधे हुये नहीं है। इनका नैतिक शास्त्र जीवन की समस्याओं का समाधान देता है। इस नीतिशास्त्र का प्रथम उद्देश्य जीवन के दुखों से मुक्ति पाना था। उन्होंने समस्त मानव जगत के समक्ष विश्व बंधुत्व का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। तथागत ने वही कहा जो जीवन के लिये उचित, उपयोगी व व्यवहारिक था। तथागत के बौद्ध दर्शन में क्षणभंगुरता व अनीश्वरवाद के सिद्धान्त को भी महत्व दिया। दर्शन में मध्यम मार्ग का भी वर्णन किया गया है। इसके अनुसार श्रद्धा, शील व समाधि पर जोर दिया गया है। प्रज्ञा का अभिप्राय परम तत्वां का अभिप्राय मन, वचन व शरीर से अहिंसा एवं सत्यतापूर्वक सदाचार का आचरण करना परम तत्वों का साक्षात्कार शील का आचरण करना तथा समाधि से तात्पर्य चित्र का समाधान, परमशान्ति व तृष्णा का अंत है।

बौद्ध दर्शन में आदर्शवादी समाज के लिये मैत्री, करुणा, मुदिता व उपेक्षा जैसे भावों को धारण करने की शिक्षा दी है। सामाजिक मूल्यों के पालन करने या न करने पर व्यक्ति के साथ समाज भी प्रभावित होता है चूंकि दोनों एक दूसरे से अर्न्तसम्बन्धित है। अतः व्यक्ति भी इससे पूर्ण प्रभावित होता है और समाज भी। इस प्रकार बौद्ध दर्शन में नैतिक व सामाजिक मूल्यों को अर्न्तसम्बन्धित बताया या है जिनके मध्य रेखा नहीं खींची जा सकती है।

इस धर्म की शिक्षाओं ने मानव को जीवन जीने का नया आयाम प्रदान किया है लेकिन इसकी उपयोगिता वर्तमान समय में नैतिक व सामाजिक मूल्यों के अवमूल्यन के कारण अधिक बढगयी है। मानव केन्द्रित इस धर्म में 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय व जगत हिताय' सिद्धान्त के आधार पर मानव के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। वैश्वीकरण के इस दौर में मानव कल्याण को सर्वोपरि बना शान्ति की स्थापना आवश्यक है। यह बौद्ध धर्म एवं दर्शन के माध्यम से सम्भव हो सकता है। समाज में फैली कुरीतियों, वैमनस्यता की भावना को समाप्त कर विश्व बन्धुत्व व मित्रता की भावना को विकसित किया जा सकता है। आधुनिक समय की भागदौड़ भरी जिन्दगी में हताशा, कुन्ठा, चिन्ता, तनाव तथा बीमारियों को दूर करने में बौद्ध दर्शन की 'ध्यान की विपस्यना पद्धति'कारगर सिद्ध हुई है। इसने मानव की व्यक्तिगत व सामूहिक बुराइयों को समाप्त करने में अहमभूमिका निभाई है। इससे बौद्ध दर्शन की नैतिक व सामाजिक मूल्यों की प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध होतीहै।

बौद्ध धर्म व दर्शन द्वारा प्रतिपादित नैतिक मूल्यों का व्यवहारिक स्तर पर प्रयोग करें तो वर्तमान में विद्यमान समस्याओं का स्वतः ही समाधान हो जायेगा। इस वैश्विक स्तर पर शान्ति व सहयोग की धारा प्रवाहित की जा सकती है। अतः इससे नैतिकता का मानवता के गुणों का विकास सम्भव है तथा यह मार्ग युक्ति युक्त है। इससे समाज में नैतिक कर्तव्यों व मूल्यों को पुनः स्थापित किया जा सकता।

अपने अनुयायियों के लिए बुद्ध ने एक आचार विधान भी तैयार किया था । इस आचार विधान में दस नैतिक उपदेशों का वर्णन है –

आचार विधान के 10 नैतिक उपदेश :

1. अस्तेय, 2. अहिंसा का पालन, 3. मद्यपान निषेध, 4. अपरिग्रह व्रत का पालन, 5. ब्रह्मचर्य का पालन, 6. नृत्य–गान का त्याग, 7. पुष्प तथा सुगंधित वस्तुओं का त्याग, 8. असमय भोजन का त्याग, 9. कोमल शैया का त्याग तथा 10. कामिनी कंचन का त्याग।

बुद्ध ने आत्मा तथा ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करते हुए पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत को स्वीकार किया। बुद्ध का मत था कि पुनर्जन्म आत्मा का नहीं वरन् अनित्य अहंकार का होता है । जब मनुष्य की तृष्णा और वासना नष्ट हो जाती है तब उसे निर्वाण प्राप्त होता है। बौद्ध धर्म में वेद की प्रामाणिकता को अस्वीकार किया गया है । यज्ञ, अनुष्ठान तथा धार्मिक आडंबर का विरोध किया गया है। ऊंच–नीच, अमीर–गरीब, जाति–पाति की भावना की निंदा की गयी है। बौद्ध धर्म में बौद्ध धर्म का मार्ग सभी जातियों के लिए खुला था। बौद्ध धर्म के द्वारा भारतीय समाज में धार्मिक तथा सामाजिक क्रांति लाने का प्रयास किया गया था।

बौद्ध धर्म की देन

बौद्धधर्म अपनी जन्म भूमि से लुप्त होने के बावजूद भी भारतीय समाज एवं संस्कृति पर इस धर्म की अमिट छाप देखी जा सकती है। बौद्ध धर्म के प्रभाव को निम्नलिखित शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया जा सकता है –

- **धर्म का प्रभाव –** बौद्ध धर्म के प्रभाव में आने से भारतीय समाज में प्रचलित कर्मकांड, बलि तथा यज्ञ पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बौद्ध धर्म के अहिंसा का व्यापक प्रभाव है। अहिंसा के उपदेशों को अपनाने के फलस्वरूप हिन्दू समाज में पशुओं की बलि प्रथा समाप्त हुई। यज्ञ में बलि देने की प्रथा का अंत हुआ। समाज में निरामिष भोजन की ओर आकर्षण बढ़ा है। वैष्णव लोग निरामीष भोजन करते हैं । शाकाहारी भोजन करने वालों की संख्या में वृद्धि बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाता है। साधु तथा साधु जीवन का हिन्दू समाज में आगमन बौद्ध धर्म के प्रभाव को प्रस्तुत करता है । बौद्ध भिक्षुओं से प्रभावित होकर वैष्णव, शैव तथा शाक्त संप्रदाय के साधु हिन्दू समाज में अस्तित्व में आए । बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण हिन्दू समाज में प्रचलित कई प्रकार की धार्मिक कुरीतियों का अंत हुआ। पुजारियों का वर्चस्व समाप्त हुआ तथा पुजारियों द्वारा कर्मकांड तथा यज्ञ के नाम पर शोषण का अंत हुआ।
- **राजनीतिक जीवन पर प्रभाव –** भारतीय समाज में जाति प्रथा, ऊंच–नीच के भेदभाव, सामाजिक असमानता इत्यादि को समाप्त करने की दिशा में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है । बौद्ध धर्म के अस्तित्व में आने से पहले पेशा पर आधारित वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित सामाजिक व्यवस्था का रूप धारण कर ली थी । भारतीय समाज में विभिन्न जातियों के कई स्तर बन गए थे। उनमें ऊंच–नीच के भेदभाव उत्पन्न हो गए थे। महिलाओं तथा शूद्रों एवं गरीब वैश्यों का समाज में कोई स्थान नहीं था । उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। उन्हें कई प्रकार के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा जाता था। इन लोगों द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया गया था, क्योंकि बौद्ध धर्म के अष्टांगिका मार्ग नैतिकता से ओत–प्रोत हैं। आज भी भारतीय समाज में उन आठ अष्टांगिक मार्गों का प्रभाव परिलक्षित होता है ।
- **बौद्धिक स्वतंत्रता एवं साहित्य पर प्रभाव –** बौद्ध धर्म के कारण भारतीय समाज में साहित्य एवं चिंतन के क्षेत्र में नवजागरण आया। अंधविश्वास का स्थान तर्क एवं ज्ञान ने लिया। इससे लोगों में आत्म–विश्वास पैदा हुआ। बौद्धों ने अपने धर्म प्रचार के लिए नवीन साहित्य का सृजन किया। उनकी रचनाओं में पाली भाषा का साहित्य समृद्ध हुआ । बौद्धों ने कुछ प्रसिद्ध अपभ्रंश कृतियों की रचना की थी । ललित विस्तार, मिलिन्द पनही, महावस्तु, मंजुश्री मूल कल्प, दिव्या बदान, सारि पुत्र प्रकरण, बुद्ध चरित्र एवं जातक कथाएं बौद्ध धर्म की अमूल देन हैं। बौद्ध विहार शिक्षा के केंद्र थे। बिहार में नालंदा तथा विक्रमशीला एवं गुजरात में बल्लमी प्रसिद्ध विद्या केंद्र थे । नागार्जुन, वसुमित्र, दिनांग तथा धर्मकीर्ति ने विद्या तथा ज्ञान की प्रगति में योगदान दिया।
- **कला पर प्रभाव –** भारतीय कला भी बौद्ध धर्म से प्रभावित हुई । बौद्ध धर्म से प्रभावित वास्तु कला, मूर्ति कला और चित्रकला के अनेक उदाहरण उपलब्ध है। सांची, भरहुत और नागार्जून के स्तूप, अजंता एवं एलोरा के भीत्ति – चित्र, गुफाओं में बने मंदिर तथा अशोक स्तंभ भारतीय कला के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं । बौद्ध मंदिरों, स्तूपों तथा मूर्तियों के निर्माण से वास्तुकला और मूर्तिकला के क्षेत्र में नई शैलियों का विकास हुआ। जिसे गंधार कला के नाम से जाना जाता है । बौद्ध धर्म का विस्तार विदेशों में भी हुआ । थाईलैंड, कंबोडिया, जावा, सुमात्रा, बर्मा, श्रीलंका, तिब्बत और नेपाल की संस्कृति पर भारतीय संस्कृति की स्पष्टतः छाप मिलती है।
- **आर्थिक जीवन पर प्रभाव –** बौद्ध धर्म के अस्तित्व में आने से पहले व्यापारियों और कुलीनों के पास आपार संपत्ति एकत्र हो गयी थी। इससे सामाजिक तथा आर्थिक विषमता उत्पन्न हो गयी थी । बौद्ध धर्म में धन संग्रहण करने पर जोर दिया गया। बौद्ध धर्म के अनुसार हिंसा, क्रूरता और

घृणा के कारण गरीबी है। किसानों को बीज, व्यापारियों को धन तथा मजदूरों को मजदूरी मिलनी चाहिए। बौद्ध आचार संहिता में विलास प्रियता पर रोक लगायी गयी थी । कर्जदार तथा दासों को बौद्ध धर्म में प्रवेश का अधिकार नहीं था।

उस समय में शिक्षा की स्थिति एवं आज के समय में प्रासंगिता

पूर्णतः बौद्ध दर्शन एवं व्यवस्था पर निर्मित है, बौद्ध एक ओर करोड़ो लोगों में ज्ञान के द्वारा प्राण फूंकने में समर्थ है तो दूसरी ओर समकालीन ज्ञान पद्धति की कमियों को दूर करने में समर्थ है। समकालीन शिक्षा स्वरूप उन गरीब बालकों को कोई दूसरा अवसर नहीं प्रदान करती जो इसके संकीर्ण सोच के द्वारा प्रवेश से वंचित रह जाते हैं या जो सामाजिक या आर्थिक कारणों की विवशता से त्रस्त होकर इससे बाहर निकल जाते है, समकालीन शिक्षा संरचना निहित स्वार्थो की सहायता करने को प्रोत्साहित करती है, यथ स्थितिवाद को प्रोत्साहन देती है तथा शैक्षिक समानता के अवसरों का गला घोंटती है। वस्तुतः आधुनिक कालीन शिक्षा संरचना दोषयुक्त तथा असमानताओं को बढावा देने वाली है।

तार्किक चिन्तन एवं अभिवृत्तियों में विकास के साथ–साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति में अत्यन्त तीव्र गति से वृद्धि हुई है, इसे ''बौद्धिक क्रान्ति'' कहा जा सकता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी की प्रगति ने समकालीन शिक्षा के व्यवस्था को भी चुनौती बना दिया है। वर्तमान कालीन शिक्षा व्यवस्था में जो ज्ञान प्रदान किया जा रहा है वह ज्ञान अगले वर्षो में पिछड़ी मानी जाने लगती है। समकालीन ज्ञान औपचारिकता के बन्धन में जकड़ी है कि वह पूर्णतः निष्क्रिय होकर मूल उद्देश्य से भटकती जा रही है, वस्तुतः आज की शिक्षा संरचना उपाधिधारक बनती जा रही है न कि ज्ञानवर्धक। इसी कारण शिक्षित बेरोजगारी में तीव्र वृद्धि हो रही है। वर्तमान ज्ञान प्रणाली वैदिक सभ्यता व संस्कृति से अलगाव का स्वरूप बना रही है ।

वस्तुतः अधुनातन शिक्षा व्यवस्था ने देश में अनेक भेद एवं विषमताओं को जन्म दिया है अतः वर्तमान शिक्षा संरचना में देश की आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम नही है, अतएव एक ऐसी शिक्षा संरचना की आवश्यकता है जिससे देश या समाज तथा व्यक्ति की समस्याओं का समाधान कर सकें। यह कार्य बौद्ध काल में वर्णित ज्ञान स्वरूप को अंगीकृत कर सकता है, इस शिक्षा संरचना में समानता का वातावरण था, ऊँच नीच का भेदभाव नहीं था, न ही धनी–निर्धन का भाव। शिक्षा मुक्त हस्त से आचार्यो द्वारा सुयोग्य पात्र को प्रदान की जाती थी, गुरू–शिष्य सम्बन्ध परस्पर सामंजस्यपूर्ण मधुर थे। शिष्य गुरू को यथोचित सम्मान प्रदान करता है। स़्त्री शिक्षा तथा शूद्र शिक्षा समान रूप से दी जाती थी, समाज में स्नातक का सम्मानित स्थान था।

समाज में एकता का पाठ बौद्ध शिक्षा केन्द्र भली–भांति सफलतापूर्वक पढ़ा रहे थे।अनुसंधानों पर ज्यादा बल प्रदायित था, नवीनतम अनुसंधानों को प्रेरित किया जाता था। अतएव बौद्ध काल में शिक्षा की स्थिति या विस्तार के अध्ययन द्वारा बौद्ध ज्ञान प्रणाली का जानकारी कर प्राप्त निष्कर्षों को समकालीन शिक्षा में प्रयोग कर वर्तमान स्वरूप में सुधार तथा समद्ध बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुकर, पी., और मलफोर्ड, बी. (1989) क्या एक उच्च विद्यालय समर्थन प्रणाली 50 के दशक या 80 और 90 के दशक के लिए बनाई गई है? प्रशिक्षण अधीक्षक, खण्ड–3पृष्ठ 13,–17
2. बिशप, पी., और मल्फोर्ड, बी. (1996) स्कूलों में सशक्तिकरणः, शैक्षिक सुधार की इंटरकांटिनेंटल पत्रिका, खंड–2 पृष्ठ–193–204
3. एडलर, एम., अर्नोट, एम., बेली, एल., मैकएवॉय (1997) स्कॉटलैंड, एडिनबर्ग में छोटे संकायों में प्रशिक्षण निगम का विकासः राष्ट्रपति पद का चरण, एडिनबर्ग अकादमी खण्ड–3 पृष्ठ 238–253
4. बीन, जे. (1998)शिक्षण के लिए एक स्वशासी उद्देश्य को पुनः प्राप्त करें। शिक्षाप्रद नियंत्रण. खण्ड–5 पृष्ठ–8–11

5. बिशप, पी., और मलफोर्ड, बी. (1999) वे कब सीखेंगे, केंद्र द्वारा थोपे गए समायोजन का एक बड़ा उल्लंघन। खण्ड–2 पृष्ठ 178–188.

6. बार्थ, आर. (1999) प्रमुख बाहरी अवसर, आरआईः रोड आइलैंड चौरिटी।

7. बुश, टी. (1999) आपदा या चौराहा : नब्बे के दशक में ज्ञानवर्धक एजेंसी का कानून समय पर नहीं। अनुदेशात्मक प्रशासन एवं प्रशासन

8. बोलम, आर., डनिंग, जी., और कार्स्टनजे, पी.(2000) यूरोप में नए प्रमुख। बर्लिनः वैक्समैन.वॉल्यूम.खंड –3 पृष्ठ –12–15

9. बास, बी. (2000). स्कूली शिक्षा कंपनियों में नियंत्रण का आसन्न। जर्नल मुखीयापन अनुसंधान । खंड–7 पृष्ठ–19–39

10. केस, पी., केस, एस., और कैसलिंग, एस. (2000), ग्रैटिफाई डिस्प्ले यू आर ऑपरेशनलः ए जबरदस्त अप्रेजल ऑफ द क्लैश ऑफ ओएफएसटेड एग्जाम ऑन बिगिनिंग स्कूल्स। ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी ऑफ टीचिंग, खंड–2 पृष्ठ 606–629

11. .बृड्रेंट एम. (2001) इंग्लैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉलेज प्रबंधन ग्राउंडिंग समय सारिणी का विकासः एक योग्य मूल्यांकन। अकादमिक नियंत्रण और संगठन, खंड–2 पृष्ठ, 228–246

12. बार्थ, आर. (2001)प्रशिक्षक आयोजक, फी डेल्टा कप्पन, खंड–6 पृष्ठ–442–448

13. बार्नेट्स, के.एस., मैककॉर्मिक, और कॉनर्स, आर. (2002)परिवर्तन कारी स्कुलो में प्रबंधन शिक्षाप्रद प्रबंधन कि शैक्षिक पत्रिका, खंड 39 पृष्ठ 25।

❖◆❖